



युवा जीवन

फ़रवरी 2025

परमेश्वर ने आपके लिए जो अच्छाई और आशीर्वाद रखा है
उसे प्राप्त करने के लिए अपने हृदय की रक्षा करें।

अपने हृदय की रक्षा करें।



हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 30/03/2025, 29/06/2025 और 31/08/2025 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा। कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।



Jesus Redeems - Hindi



www.comfortertv.com

संपर्क संख्या : +919750955548



इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश। आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो, और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi

Timing: 5.00 PM- 7.30 PM

World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE

Timing: 5PM - 7:30PM

R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad

Timing: 4.00 PM – 6.00 PM

Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

प्रस्तावना

मेरे प्रिय नौजवान पुत्र,

यीशु मसीह के नाम पर प्यार भरा अभिवादन!

जागृति के इन दिनों में, मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ यह देखते हुए कि वह तुम्हारा सामर्थी रूप में उपयोग कर रहा है। जब आप इस जागृति की दौड़ में भाग लेते हैं, तो आपको तीन बातों को ध्यान में रखना चाहिए: समर्पण, तत्परता और ध्यान। जागृति शुरू हो चुकी है, और इसे फैलाना हमारी ज़िम्मेदारी है। इसलिए, इस वर्ष, 2025 के लिए समर्पण को अपना लक्ष्य बनाएँ।

यह ज़रूरी है कि आपका पूरा मन जागृति पर केंद्रित रहे और उसमें निहित हो।

अपने मन की रक्षा करना बेहद ज़रूरी है क्योंकि, जब आप सीधे जागृति के मार्ग

पर चलते हैं, तो आपको दोगुना सावधान रहना चाहिए। विरोधी, शैतान जानता है कि अगर

वह आपके मन को भटकाता है, उसे पाप से दाग देता है, या उसे अशुद्ध करता है, तो आपका लक्ष्य और दिशा बदल जाएगी।

इस प्रकार, वह आपके मन को भटकाने के लिए आग के तीरों से हमला करने का प्रयास करेगा।

बुद्धिमान राजा सुलैमान लिखते हैं, “सबसे बढ़कर, अपने मन की रक्षा करो, क्योंकि तुम जो कुछ भी करते हो वह उसी से निकलता है” (नीतिवचन 4:23)। यदि आप अपने हृदय की रक्षा करने में विफल रहते हैं, तो चोर, शैतान, आपके अच्छे विचारों, नैतिकता, प्रतिभाओं, पवित्र इच्छाओं और सेवकाई के लिए बोझ को चुराने, भ्रष्ट करने और नष्ट करने के लिए चुपके से अंदर आ जाएगा। वह आपके हृदय से बहने वाले जीवनदायी झरनों को दूषित करने का प्रयास करेगा, इसे दुष्ट और बुरे विचारों से भर देगा।



नौजवानों, सावधान! शैतान ने राजा सुलैमान को भी बहकाने में कामयाबी हासिल की, जिसने परमेश्वर से एक सुखद प्रार्थना की थी और उससे ज्ञान प्राप्त किया था। (1 राजा 11:4-10)। सुलैमान की पत्नियों ने उसका मन विदेशी देवताओं की ओर मोड़ दिया। राजा दाऊद के विपरीत, सुलैमान प्रभु के साथ ईमानदार नहीं था। उसने प्रभु का पूरी तरह से अनुसरण नहीं किया और उसकी दृष्टि में बुरा किया। भले ही परमेश्वर ने सुलैमान को दो बार दर्शन दिए और स्पष्ट रूप से उसे अन्य देवताओं का अनुसरण न करने का आदेश दिया, सुलैमान ने अपना मन प्रभु से दूर कर दिया और उनके निर्देशों का उल्लंघन किया। परिणामस्वरूप, प्रभु सुलैमान से नाराज़ हो गया (पद, 9-10)।

नौजवान, परमेश्वर ने इस अंश को आपके लिए एक चेतावनी के रूप में पवित्रशास्त्र में दर्ज किया है, इसलिए आपको अपने मन की सावधानीपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। पूरी लगन से अपने मन की रक्षा करो, क्योंकि तुम प्रभु के हो! परमेश्वर का अनुग्रह हमेशा तुम्हारे साथ रहे!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजर



लज्जा की राख आशीषों का ताज



क्या आप अपने बचपन और परिवार के बारे में बता सकते हैं?

मैं कन्याकुमारी जिले के एक कस्बे नेयूर में एक मसीही परिवार में पैदा हुआ और पला-बढ़ा। मेरे दादाजी के काम की वजह से हमारा परिवार तिरुनेलवेली चला गया। बाद में, मेरे पिता की नौकरी की वजह से, जब मैं चार साल का था, तब हम कोविलपट्टी चले गए।

भले ही मेरा जन्म एक मसीही परिवार में हुआ था, लेकिन हमारा परमेश्वर के साथ कोई व्यक्तिगत रिश्ता नहीं था। बचपन में, मैं सिर्फ इसलिए संडे स्कूल जाता था क्योंकि अगर मैं ऐसा नहीं करता तो मेरी माँ मुझे डांटती थीं। मैं सिर्फ नाश्ते और जूस के लिए संडे स्कूल जाता था। मैं वेकेशन बाइबल स्कूल (VBS) ज़रूर जाता था क्योंकि वे हमें एक दिन पिकनिक पर ले जाते थे। यही मेरे बचपन के अनुभवों का सार है।

क्या आप अपनी शिक्षा के बारे में बता सकते हैं?

मैं एक होनहार छात्र नहीं था, बस औसत दर्जे का था। सरकारी नियमों के अनुसार, 9वीं कक्षा तक सभी को पास कर दिया जाता है। किसी तरह, मैं भी 9वीं कक्षा में पहुँच गया। लेकिन 10वीं कक्षा में, सब कुछ बदल गया। एक दिन, मेरे स्कूल के प्रिंसिपल ने मेरे पिता को बुलाया और कहा, “अपने बेटे का ट्रांसफर सर्टिफिकेट (TC) ले लो। उसके नतीजों से स्कूल का प्रदर्शन खराब होगा और हमारे

स्कूल की प्रतिष्ठा को नुकसान होगा।” मेरे पिता ने विनती की, “उसे एक मौका दो; मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वह सफल होगा।” प्रिंसिपल सहमत हो गए और मैंने उसी स्कूल में पढ़ाई जारी रखी।

तभी हम एक परिवार के रूप में एक साथ प्रार्थना करने लगे। 10वीं कक्षा की परीक्षा में जाने से पहले, मैं अपने पासबान के साथ प्रार्थना करता और फिर अपनी परीक्षा लिखता। परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं 10वीं कक्षा में पास हो गया,

हालाँकि कम अंकों के साथ। सभी को लगा कि मैं फेल हो जाऊँगा, लेकिन यीशु ने मुझे जीत दिलाई।

मेरे पिता, एक सिविल इंजीनियर, हमेशा चाहते थे कि मैं भी एक बनूँ। हालाँकि, जब तक मैंने 10वीं कक्षा पूरी नहीं की, तब तक मेरे पास कोई लक्ष्य या महत्वाकांक्षा नहीं थी - चाहे इंजीनियर बनना हो या कुछ और। मेरे अंक इंजीनियरिंग के लिए पर्याप्त नहीं थे। जब मैं इस बारे में उलझन में था कि आगे क्या करना है, तो किसी ने सुझाव दिया कि मैं डिप्लोमा कर सकता हूँ। लेकिन मेरे अंक उसके लिए भी पर्याप्त नहीं थे।

क्या आप 10वीं कक्षा के बाद अपनी पढ़ाई जारी रख पाएँ?

मैं एक पॉलिटेक्निक कॉलेज गया और सीएस (कंप्यूटर साइंस) ग्रुप के लिए कहा, लेकिन मेरे पिता चाहते थे कि मैं सिविल इंजीनियरिंग करूँ। इसलिए हमने दोनों के लिए आवेदन किया। हालाँकि, मेरे कम अंकों के कारण मुझे अपमानित होना पड़ा। उन्होंने कहा, “क्या आपको इस समूह की आवश्यकता है? बाहर जाओ और पहले एक कागज़ पर समूह का नाम लिखो।” शर्मिंदगी महसूस करते हुए, मैं वहाँ से चला गया। बाद में, मैंने शिवकाशी के एक कॉलेज में सिविल इंजीनियरिंग में दाखिला ले लिया। शुरू में, मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन क्योंकि मेरे पिता इस क्षेत्र में थे, इसलिए उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया। धीरे-धीरे, मेरी

रुचि विकसित हुई और मैंने तीन साल का डिप्लोमा पूरा किया।

हालाँकि, मैंने अपनी डिग्री पूरी नहीं की। सभी ने मुझे काम करना शुरू करने के लिए कहा, लेकिन मेरे पिता ने जोर देकर कहा कि मैं बीई (BE) करूँ। मैंने तिरुनेलवेली के एक कॉलेज में दाखिला लिया और इसे पूरा किया, हालाँकि मैं शुरू में सभी विषयों में पास नहीं हुआ।

आपने अपने जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ कैसे देखा?

जैसे-जैसे मैंने परमेश्वर की तलाश की, उन्होंने मुझे आशीष देना शुरू कर दिया। अपना डिप्लोमा पूरा करने के बाद, मैंने बच्चों की सेवकाई और विजुअल मीडिया सेवकाई में एक भाई के साथ काम करना शुरू किया। मैंने पैड (कीबोर्ड) बजाना सीखा और कुछ सभाओं में बजाना शुरू किया। यह तब भी जारी रहा जब मैं कॉलेज में था। हालाँकि, मेरा विश्वास नाममात्र का था - मैं चर्च जाता था, बाइबल पढ़ता था और संगीत बजाता था, लेकिन परमेश्वर के साथ मेरा रिश्ता बहुत कम था।



यीशु के साथ आपका रिश्ता कब गहरा हुआ?

कोविड-19 महामारी के दौरान, मेरा जीवन बदल गया। मेरा पूरा परिवार - मेरे पिता, माता, भाई और मैं - कोविड से संक्रमित हो गए। घर में बंद रहने के कारण, मुझे मृत्यु का भय महसूस हुआ। उस समय, हमने “चलो प्रार्थना करें” नामक एक प्रार्थना कार्यक्रम देखा। प्रार्थना के दौरान, परमेश्वर ने मुझसे बात की, और कहा, “इन सभी वर्षों में, मैंने आपके लिए बहुत कुछ किया है। आपने मेरे लिए क्या किया है?” इसने मुझे गहराई से छू लिया। मैंने स्वीकार किया, “हाँ, परमेश्वर,



मैंने ऐसा जीवन जिया है जो आपको खुश नहीं करता था, लेकिन अब मैं खुद को आपके हाथों समर्पित करता हूँ।”

मैंने आंसुओं के साथ अपने पापों को स्वीकार किया और अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया। उस दिन से, मेरे जीवन ने एक नई दिशा ले ली। तब तक, मैं सिर्फ एक संगीतकार या बैकअप गायक था। प्रभु के सामने समर्पण करने के बाद, उन्होंने मेरे लिए आराधना का नेतृत्व करने के दरवाज़े खोल दिए। एक मिनट के ज़रिए, मैंने हमारे शहर के एक चर्च में हर बुधवार को आराधना का नेतृत्व करना शुरू किया, जो आज भी जारी है। चूँकि मेरे पिता भी सेवकाई में शामिल हैं, इसलिए परमेश्वर ने मुझे उनके साथ सेवा करने की कृपा दी।

अब आपका जीवन कैसा है?

मैं परमेश्वर और उनके काम को समय देता हूँ। मेरा सिविल व्यवसाय अच्छा चल रहा है, और मैं मिनिस्ट्री में सेवा करने का हर अवसर लेता हूँ।

परमेश्वर को प्राथमिकता देने पर, उन्होंने मुझे ऊपर उठाया है। पिछले साल, परमेश्वर ने मुझे फाइव स्टार चिकन नामक एक व्यवसाय शुरू करने में सक्षम बनाया, जो फल-फूल रहा है।

आप नवयुवकों को क्या बताना चाहेंगे?

अगर परमेश्वर आपको आपके सुविधाजनक स्थान से अलग करते हैं, तो उनसे सवाल न करें। वह जो कुछ भी करते हैं वह अच्छे के लिए होता है और उसका एक उद्देश्य होता है। जैसे मैं पहले करता था वैसे सवाल न पूछें; इसके बजाय, सभी चीज़ों के लिए धन्यवाद दें। अगर आप परमेश्वर के करीब रहेंगे, तो वह आपके करीब रहेंगे, आपको आशीष देंगे और आपको ऊपर उठाएँगे।



JESUS REDEEMS MINISTRIES & FAMILY OF GOD CHURCH PRESENTS

In KOLKATA

FEBRUARY **08** SATURDAY
10:00 am - 4:00 pm

**YOUTH
FESTIVAL**

FAMILY OF GOD CHURCH
Taldi, 24 south parganas
West Bengal - 743376

Special Youth Gospel meeting

MESSAGE & PRAYER
BRO. AVINASH





हर पल हमारा है!

प्रिय सफल नवजवानों, आप सभी को मेरा हार्दिक अभिवादन!

समय और मौसम अविश्वसनीय गति से बदल रहे हैं। जहाँ कई लोग सफलता प्राप्त करने के लिए इन क्षणभंगुर क्षणों का लाभ उठाते हैं, वहीं अन्य लोग उन्हें बर्बाद कर देते हैं, जिससे वे असफलता की चपेट में आ जाते हैं। यदि आप खुद को यह कहते हुए पाते हैं, "मैंने अपना समय बुद्धिमानी से उपयोग किए बिना बर्बाद कर दिया है," तो यह संदेश विशेष रूप से आपके लिए है।

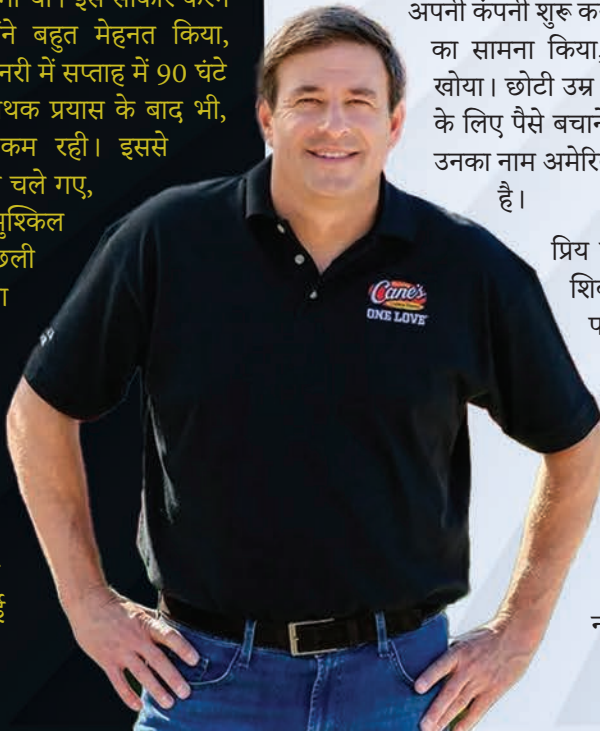
टॉड ग्रेव्स का जन्म 1972 में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था और उन्होंने जॉर्जिया विश्वविद्यालय से स्नातक किया था। अपने कॉलेज के वर्षों के दौरान, उन्होंने अपना खुद का रेस्तरां खोलने का सपना देखा। हालाँकि, ग्रेव्स के पास अपने सपने को हकीकत में बदलने के लिए वित्तीय संसाधनों की कमी थी। इसे साकार करने के लिए दृढ़ संकल्पित, उन्होंने बहुत मेहनत किया, कैलिफोर्निया में एक तेल रिफाइनरी में सप्ताह में 90 घंटे काम किया। फिर भी, इतने अथक प्रयास के बाद भी, आमदनी उनकी ज़रूरत से कम रही। इससे विचलित हुए बिना, वे अलास्का चले गए, जहाँ उन्होंने अत्यधिक मुश्किल परिस्थितियों में सैल्मन मछली पकड़ने का कठिन काम किया और प्रतिदिन 20 घंटे तक काम किया।

अपने दोस्तों और परिवार के सहयोग से और अपनी बचत का निवेश करके, टॉड ग्रेव्स ने अपने सपनों का रेस्टोरेंट शुरू किया और इसका नाम रेजिंग केन रखा। खाद्य उद्योग में कोई

पूर्व अनुभव न होने के बावजूद, उन्होंने अपना उद्यम स्थापित करने के लिए सप्ताह के सातों दिन अथक परिश्रम किया। उनकी

अथक मेहनत ने रेजिंग केन के चिकन फिंगर्स को सबसे तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों में से एक बना दिया, जिसकी कीमत अब 370 करोड़ डॉलर है। उनके समर्पण की बदौलत, चिकन फिंगर्स के लिए मशहूर इस खास फास्ट-फूड चेन की 40 से ज़्यादा जगहों पर 800 से ज़्यादा शाखाएँ हैं।

अपनी कंपनी शुरू करने से पहले, टॉड ग्रेव्स ने कई चुनौतियों का सामना किया, लेकिन कभी खुद पर भरोसा नहीं खोया। छोटी उम्र से ही, उन्होंने अपने सपनों के रेस्टोरेंट के लिए पैसे बचाने के लिए 20 घंटे काम किया। आज, उनका नाम अमेरिका के अरबपतियों की सूची में चमकता है।



प्रिय पाठकों, हम कितनी बार खुद को यह शिकायत करते हुए पाते हैं, "मेरे पास पर्याप्त समय नहीं है," और इसे कुछ न हासिल करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल करते हैं? अगर हम ईमानदारी से सोचें, तो हमें एहसास होगा कि हम ही अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। टॉड ग्रेव्स की तरह, यदि हम हर पल का भरपूर लाभ उठाएंगे, तो एक दिन समय स्वयं गर्व से हमारा नाम लेगा!

अपने मन की रक्षा करें

हर व्यक्ति अपने जीवनकाल में सिर्फ़ एक बार ही युवावस्था का अनुभव करता है। इस अवस्था के दौरान लिए गए निर्णय अक्सर किसी के जीवन की सफलता को निर्धारित करते हैं। इस अवधि के दौरान कई लोग अपने मन में गलत निर्णय लेते हैं और अपना रास्ता खो देते हैं। केवल कुछ ही सही निर्णय लेते हैं, चुनौतियों का सामना करते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। "क्योंकि जैसा मनुष्य अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।" (नीतिवचन 23:7)। हम जो कहते हैं, उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण है कि हम अपने मन में क्या सोचते हैं। इसलिए, हमारे मन में जो विचार हैं, वे हमारे जीवन को आकार देते हैं।

जीवन की हर परिस्थिति में, आपको यह सुनिश्चित करने के लिए सावधानी से काम करना चाहिए कि आपका मन भटक न जाए। आज, कई लोग अपनी परिस्थितियों को दोष देते हैं और गलत निर्णय लेते हैं, जिससे वे सही रास्ते से भटक जाते हैं। दानिय्येल के जीवन की ओर ध्यान करें, जिसे यरूशलेम से बाबुल में बंदी बनाकर ले जाया गया था, परिस्थितियाँ प्रतिकूल थीं। दानिय्येल और उसके साथियों के लिए, राजा का भोजन





और दाखमधु एक बड़ा सौभाग्य और आशीर्वाद होता। हालाँकि, ऐसी स्थिति में, दानिय्येल ने अपने मन में एक दृढ़ निर्णय लिया।

“पर दानिय्येल ने निश्चय किया कि वह राजसी भोजन और मदिरा से अपने आपको अशुद्ध न करेगा, और उसने प्रधान अधिकारी से अनुमति मांगी कि वह इस तरह से अपने आपको अशुद्ध न करे” (दानिय्येल 1:8)। पाप करने के प्रलोभन का सामना करने पर भी, दानिय्येल ने अपने हृदय की रक्षा की, सही निर्णय लिया, और इस तरह से जीवन व्यतीत किया जिससे परमेश्वर प्रसन्न हुआ।

कोई भी कार्य कितना भी आकर्षक क्यों न लगे, यदि वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता, तो हमें उसे अस्वीकार करने का संकल्प अवश्य लेना चाहिए। दुर्भाग्य से, आज परमेश्वर के बहुत से बच्चे बाकी दुनिया की तरह अव्यवहारिक रिश्तों में पड़ जाते हैं या आसानी से बहक जाते हैं। इसलिए, अपने मन की रक्षा करें ताकि यह संसार से अछूता रहे। “कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जाने, परन्तु वचन, चालचलन, प्रेम, आत्मा, विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन” (1 तीमुथियुस 4:12)।

शिमशोन, जिसे परमेश्वर ने इस्राएल की रक्षा करने और उनका न्याय करने के लिए चुना था, अपने मन की रक्षा करने में विफल रहा। वह उसके लिए बिछाए गए जाल में फंस गया, पलिशतियों द्वारा पकड़ लिया गया, और उसने परमेश्वर द्वारा उसके लिए रखे गए दर्शन और उद्देश्य दोनों को खो दिया। परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए महान योजनाएँ और उद्देश्य हैं। इन्हें पूरा होते देखने के लिए, आपको अपने मन की रक्षा करनी चाहिए।

आप सोच सकते हैं, “मैं संसार में ऐसे अभिलाषाओं से अपने मन की रक्षा कैसे कर सकता हूँ?”

याद रखें “मनुष्य के सामान्य अभिलाषाओं को छोड़कर कोई परीक्षा तुम पर नहीं आया” (1 कुरिन्थियों 10:13)। हर व्यक्ति अपनी युवावस्था में ऐसे प्रलोभनों का सामना करता है। इन पर विजय पाने का एकमात्र तरीका है अपने मन को प्रतिदिन परमेश्वर से जोड़ना।

हालाँकि दानिय्येल बेबीलोन में रहता था, लेकिन उसका हृदय परमेश्वर से जुड़ा हुआ था। उसके आस-पास कई प्रलोभनों के बावजूद, परमेश्वर ने उसकी रक्षा की। यदि आप संसार की तरह सोचने और कार्य करने से इनकार करते हैं, और इसके बजाय बाइबल की आज्ञा का पालन करते हैं कि “सब से बढ़कर अपने मन की रक्षा करो, क्योंकि जो कुछ तुम करते हो वह उसी से निकलता है” (नीतिवचन 4:23), जब आप अपने हृदय को समर्पित करते हैं, तो परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा और आपको संसार से बेदाग रखेगा।

प्रिय नौजवानों, इस परमेश्वरिय निर्देश पर गौर करें, “अपने मन से खेद को दूर करो, और अपने देह से बुराई को दूर करो” (सभोपदेशक 11:10)। यदि इस कच्चे उम्र में आपके विचार गलत दिशा में हैं, तो आप अपना भविष्य बर्बाद करने का जोखिम उठाते हैं। आपका हृदय आपके जीवन का दिशासूचक है - चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, इसे परमेश्वर की सच्चाई के साथ जोड़कर रखें। इसलिए, हर परिस्थिति में अपने हृदय की सावधानी से रक्षा करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह कभी भी परमेश्वर से दूर न जाए।”





परमेश्वर जो बढ़ाता है!

“कि मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा, और निश्चय तुझे बढ़ाऊंगा।” (इब्रानियों 6:14)

मेरे प्रिय बेटे/बेटी, प्रभु आज सीधे तुमसे बात कर रहे हैं: “मैं तुम्हें आशीष दूंगा और तुम्हें समृद्ध करूँगा!”

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया, तो उसने उन्हें आशीष देते हुए कहा, “फूलो-फलो, पृथ्वी को भर दो और उस पर अधिकार करो। समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों और धरती पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर शासन करो” (उत्पत्ति 1:28)।

महान जलप्रलय के बाद, परमेश्वर ने नूह और उसके बेटों को इसी आज्ञा के साथ आशीष दिया: “फूलो-फलो, और पृथ्वी को भर दो” (उत्पत्ति 9:1)।

अकाल के दौरान, सारपत की विधवा के घर में, “जब तक यहोवा ने भूमि पर वर्षा नहीं भेजी, तब तक आटे का घड़ा खत्म नहीं हुआ, और तेल की कुप्पी नहीं सूख पाई” (1 राजा 17:16)।

जब एक भविष्यवक्ता की विधवा व्यथित होकर कह रही थी, “ऋणदाता मेरे बेटों को दास बनाने के लिए आ रहे हैं,” एलीशा ने उससे पूछा, “तुम्हारे घर में क्या है?” उसने उत्तर दिया, “सिर्फ एक छोटी कुप्पी तेल।” प्रभु ने तेल को बढ़ा दिया, जिससे उसकी कमी बहुतायत में बदल गई (2 राजा 4:1-7)।

यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों को आशीष दिया, और वे बढ़कर 5,000 से ज़्यादा लोगों की भीड़ को खिलाए गए (मत्ती 14:17-21)।

आशीष देने और बढ़ाने वाला परमेश्वर कल, आज और हमेशा एक ही है।
अपने जीवन के हर क्षेत्त्र में अपने अलौकिक बढ़ौतरी को लाने के लिए उस पर भरोसा करें!

परमेश्वर हमारे जीवन में कौन-सी आशीषें बढ़ाता है?

वह परमेश्वर जो वंश को बढ़ाता है

“मैं निश्चय ही तुझे आशीष दूँगा और तेरे वंश को आकाश के तारों और समुद्र के किनारे की बालू के समान अनगिनत करूँगा” (उत्पत्ति 22:17)। यह अब्राहम से परमेश्वर का वादा था, और हम (व्यवस्थाविवरण 1:10) में इसकी पूर्ति देखते हैं, जहाँ लिखा है कि अब्राहम के वंशज वास्तव में बहुत बढ़ गए थे। (उत्पत्ति 26:24) में, परमेश्वर इसहाक के सामने प्रकट होता है और पुष्टि करता है, “मैं तेरे वंश को

बढ़ाऊँगा।” वही परमेश्वर जिसने अब्राहम से अपना वादा पूरा किया, उसने इसहाक से भी अपना वादा पूरा किया, और उसके वंश को बढ़ाने के अपने इरादे की घोषणा की। इसी तरह, परमेश्वर ने हन्ना को उसके वंश को बढ़ाकर आशीष दिया।

जैसे उसने उन्हें आशीष दिया, वैसे ही परमेश्वर आपकी पीढ़ियों को बढ़ाने के लिए तैयार है जब आप अपने परिवार के लिए प्रार्थना करते हैं। यह परमेश्वर की इच्छा है कि आपका वंश धन्य हो। जिस परमेश्वर ने अब्राहम से अपना वचन निभाया, वह आपके जीवन में भी अपने वादों को पूरा करेगा।

परमेश्वर जो हमारे हाथों के काम को बढ़ाता है

“क्या तूने उसके और उसके घराने और उसकी सारी सम्पत्ति के चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा? तूने उसके हाथों के काम को आशीष दिया है, ताकि उसके झुंड और गाय-बैल पूरे देश में फैल जाएँ”

(अय्यूब 1:10)। अय्यूब के बारे में शैतान की यह गवाही अय्यूब और उसके परिवार पर परमेश्वर के सुरक्षात्मक हाथ को उजागर करती है। परमेश्वर ने उन्हें सुरक्षा की एक बाड़ से घेर रखा था, ताकि वे किसी भी तरह की हानि से सुरक्षित रहें।

जब आप प्रतिदिन घोषणा करते हैं, “मैं और मेरा घराना यीशु के हैं,” तो परमेश्वर की सुरक्षा आपके परिवार को भी घेरेगी। वह आपके हाथों के काम को आशीष देगा और आपके प्रयासों को बढ़ाएगा।

“दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। पूरा नाप दबा-दबाकर, हिला-हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डाला जाएगा” (लूका 6:38)। जब आप उदारता से देते हैं, तो परमेश्वर आपको भरपूर आशीष देता है। जितना अधिक आप देते हैं, उतना ही अधिक वह आपके आशीषों को बढ़ाएगा। परमेश्वर और ज़रूरतमंदों को देने में उदारता बरतें, क्योंकि यह उदार देने वाला ही है जिसे परमेश्वर आशीष देता है और समृद्ध करता है।

शास्त्र हमें यह भी प्रोत्साहित करता है, “हमेशा हर एक भले काम में बढ़ते रहो” (2 कुरिन्थियों 9:8)। जब आप दयालुता और दान के कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं, तो परमेश्वर आपके परिश्रम के फल को बढ़ाएगा और आपको समृद्ध करेगा।

परमेश्वर ने भलाई करने वालों को कैसे आशीष दिया?

तबीता नामक एक शिष्या ने उदारतापूर्वक अपने इलाके में विधवाओं और गरीबों की मदद की। हालाँकि, एक दिन अचानक उसकी मृत्यु हो गई। कोई भी उसे दफनाना नहीं चाहता था (प्रेरितों के काम 9:36)

क्योंकि उसने बहुत सारे अच्छे काम किए थे। उन्होंने पतरस को उसके लिए प्रार्थना करने के लिए बुलाया, यह विश्वास करते हुए कि प्रभु उसे फिर से जीवित कर सकते हैं। महिलाओं ने पतरस से कहा कि यदि तबीता जीवित होती, तो वह दूसरों के लिए बहुत अच्छा काम करती रहती।

प्रभु ने उसका जीवन बढ़ाया क्योंकि उसकी उपस्थिति ने बहुतों को आशीष दिया। प्रभु ने इतना बड़ा चमत्कार क्यों किया? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने बहुत से लोगों को लाभ पहुँचाया। यदि आप चाहते हैं कि पृथ्वी पर आपके दिन लंबे हों, तो ऐसा जीवन जिएँ जिससे दूसरों को लाभ हो।

परमेश्वर, जो कलीसिया को बढ़ाता है

पिन्तेकुस्त के दिन, जब पवित्र आत्मा उंडेला गया, तो एक ही दिन में 3,000 लोगों ने उद्धार पाया। कलीसिया, जो 120 लोगों से शुरू हुई

थी, शाम तक 3,120 लोगों तक बढ़ गई। प्रेरितों के काम 4:4 में हम पढ़ते हैं कि यरूशलेम में 5,000 लोगों ने उद्धार पाया और उन्हें कलीसिया में शामिल किया गया। प्रेरितों के काम 5:14 में उल्लेख किया गया है कि बहुत से पुरुषों और महिलाओं का विश्वास

बढ़ा। तीसरे अध्याय तक, अनगिनत आत्माएँ कलीसिया में जुड़ गईं, जिससे इसकी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। लोगों के बड़े समूह लगातार कलीसिया में शामिल हो रहे थे, और शिष्यों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई। प्रेरितों के काम 2 में शुरू हुआ कलीसिया प्रेरितों के काम 4 तक उल्लेखनीय रूप से बढ़ गया।

प्रिय युवा लोगों, प्रभु चाहता है कि आप अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में फले-फूलें और बढ़ें। हालाँकि, ऐसा होने के लिए परमेश्वर आपमें कुछ खास गुणों की अपेक्षा करता है। जब आप उसकी अपेक्षाओं को पूरा करते हैं, तो वह आपको आशीष देगा और आपकी पढ़ाई, काम और परिवार में फलने-फूलने में आपकी सहायता करेगा!





प्रिय नवजवानों, हम जो जागृति के इन अंतिम समय में जी रहे हैं! हम धन्य हैं कि हम देख रहे हैं और सुन रहे हैं कि हमारे प्रभु राष्ट्रों में जागृति फैलाने के लिए महान कार्य कर रहे हैं। यह महान जागृति जिसे हम आज देख रहे हैं, परमेश्वर के अनगिनत दास और दासियों के बलिदानों पर आधारित है जिन्होंने स्वयं को बीज के रूप में बोया। जागृति के इस समय के दौरान आपको प्रेरित करने के लिए, हर महीने, हम उन लोगों के जीवन का अध्ययन करेंगे जो इस परमेश्वरीय आंदोलन के बीज बन गए।

1781 में, इंग्लैंड के कॉर्नवाल के टूरो शहर में, हेनरी मार्टिन नाम के एक लड़के का जन्म एक धनी व्यापारी के घर हुआ। बहुत सुख-सुविधाओं और विशेषाधिकार के बीच पले-बढ़े, हेनरी ने शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित के शीर्ष विद्वान बन गए। हालाँकि, अपने युवा वर्षों में, उन्होंने परमेश्वर से अलगाव में जीवन जिया। अपने पिता की मृत्यु के बाद ही हेनरी ने परमेश्वर की खोज ईमानदारी से शुरू की।

अपनी बहन की प्रार्थनाओं, एक पास्टर की सलाह और डेविड ब्रेनर्ड द्वारा लिखी गई एक किताब ने हेनरी को गहराई से प्रभावित किया, जिसने उन्हें अपना जीवन पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। जैसे-जैसे वह आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ा, डेविड ब्रेनर्ड और विलियम कैरी जैसे मिशनरियों के जीवन ने उसे गहराई से प्रेरित किया। उनकी कहानियों ने उसके अंदर एक मिशनरी के रूप में सेवा करने की अदम्य इच्छा जगाई।

इस बुलाहट के लिए खुद को तैयार करते हुए, हेनरी ने हर दिन प्रार्थना और ध्यान के लिए घंटों समर्पित किए। उसने दुनिया को त्यागने और केवल परमेश्वर की महिमा के लिए जीने का संकल्प लिया। अडिग दृढ़ संकल्प के साथ, वह जागृति का प्रतीक बनने के लिए निकल पड़ा, अपने जीवन को परमेश्वर के राज्य के लिए एक बीज के रूप में प्रस्तुत किया।

यह महसूस करने पर कि लिडिया (जिस महिला से वह शादी करना चाहता था), एक मिशनरी के रूप में उसके साथ जुड़ने के लिए तैयार नहीं थी, उसने शादी के विचार को त्याग दिया और परमेश्वर के बुलाहट के प्रति समर्पित हुआ। सन 1805 में, उन्हें ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत एक एंग्लिकन मिशनरी के रूप में नियुक्त किया गया था। 24 साल की उम्र में, नौ महीने की भीषण समुद्री यात्रा को सहन करने के बाद, वह एक मिशनरी के रूप में भारत के कोलकाता पहुंचे और डेविड ब्रेनर्ड के साथ सेवकाई में सहभागी बने।



कुछ सप्ताह बाद, एक दिन अपने बगीचे में बैठे हुए, उन्होंने एक चौकाने वाला दृश्य देखा - एक बड़ी भीड़ एक रथ को खींच रही थी, जिसके दौरान एक छोटा लड़का उसके पहियों के नीचे आ गया और कुचलकर मर गया। एक अन्य अवसर पर, उन्होंने एक विधवा को उसके पति की चिता पर जिंदा जलाए जाने का दर्दनाक दृश्य देखा। इन भयावह प्रथाओं से बहुत परेशान होकर, उन्होंने विलियम कैरी से सलाह मांगी, और पूछा कि ऐसी जड़ जमाई

हुई परंपराओं को कैसे बदला जा सकता है। कैरी ने जवाब दिया, “केवल परमेश्वर के वचन के माध्यम से।” बदलाव लाने के लिए दृढ़ संकल्पित, उन्होंने बंगाली, संस्कृत, फ़ारसी, हिंदुस्तानी और अरबी सीखना शुरू किया। पटना में, उन्होंने अपना समय सुबह एक सेवक के रूप में प्रचार करने और शाम को बाइबल का हिंदुस्तानी, फ़ारसी और अरबी में अनुवाद करने के बीच बांटा। भारत के लोगों को सशक्त बनाने के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, उन्होंने स्थानीय लोगों को पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए स्कूल भी स्थापित किए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे पवित्र-शास्त्र तक पहुँच सकें और उन्हें समझ सकें। क्षेत्र के 6 करोड़ लोगों की आध्यात्मिक ज़रूरतों के बोझ तले दबे, उन्होंने न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद करने के लिए रात-रात भर अथक परिश्रम किया - प्रत्येक अध्याय को लिखने में उन्हें 10 घंटे तक का समय लगा। दीनापुर में, उन्होंने पाँच स्कूल स्थापित किए, जिससे अनगिनत गरीब बच्चों को साक्षरता और शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। उनके अथक प्रयासों से, सुसमाचार का प्रकाश कई लोगों के जीवन तक पहुँचा, जिसने अंधकार से घिरे देश में परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

उनके अथक परिश्रम के कारण, नया नियम (न्यू टेस्टामेंट) हिंदी भाषा में प्रकाशित हुआ। लेकिन उनके प्रयास यहीं नहीं

रुके - उन्होंने सिर्फ़ 18 महीनों में अरबी और फ़ारसी में महारत हासिल कर ली और न्यू टेस्टामेंट का इन भाषाओं में भी अनुवाद किया, जिससे न केवल भारतीयों बल्कि अरबी, फ़ारसियों, सीरियाई, चीनी, अफ़्रीका के बड़े हिस्से और तुर्की के लोगों तक भी पहुँचा। विभिन्न संप्रदायों और यहाँ तक कि मुसलमानों के बीच उनके सेवकाई ने कई लोगों को प्रभु के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं में बदल दिया।

हालाँकि, उनके अथक परिश्रम के कारण और भारत की कठोर जलवायु के कारण उनके स्वास्थ्य पर भारी असर पड़ने लगा। धूल भरी हवा ने उनके फेफड़ों को नुकसान पहुँचाया और अत्यधिक गर्मी ने उनके शरीर को कमजोर कर दिया। चिकित्सा विशेषज्ञों ने उन्हें स्वास्थ्य लाभ के लिए अपने वतन लौटने की सलाह दी, लेकिन हेनरी मार्टिन का संकल्प अलग था। उन्होंने इसके बजाय फारस जाने का फैसला किया। जब उन्हें चेतावनी दी गई कि वहाँ की भीषण गर्मी जानलेवा साबित हो सकती है, तो वे अडिग रहे और कहा, “मेरा उद्देश्य परमेश्वर के लिए महान कार्य करना है।”

अटूट दृढ़ संकल्प के साथ, वे फारस के बंदरगाह शहर बुशहर पहुँचे। फिर भी भीषण गर्मी ने उनके पहले से ही कमजोर स्वास्थ्य के लिए काफी जोखिम पैदा कर दिया। शिराज के ठंडे पहाड़ी शहर में स्थानांतरित होकर, वे अपने मिशन में लगे रहे। केवल नौ महीनों में, उनकी मेहनत रंग लाई और उन्होंने नए नियम का फारसी में परिष्कृत अनुवाद पूरा किया।

प्रिय युवा पाठक, दूरदर्शी भले ही लंबे समय तक जीवित न रहें, लेकिन उनके काम की विरासत पीढ़ियों को प्रभावित करती रहती है, जिससे अनगिनत हृदय यीशु के करीब आते हैं। हेनरी मार्टिन के बाइबिल के अनुवाद ने न केवल अपने समय में एक महान जागृति को जन्म दिया, बल्कि आज भी एक प्रकाश स्तंभ के रूप में खड़ा है, जो मसीह के बुलाहट की घोषणा करता है। क्या मसीह का प्रेम आपको मसीह के पदचिन्हों पर चलने के लिए विवश नहीं करता है?

हेनरी जैसे किसी व्यक्ति की क्या कहानी है, जिसने सुख-सुविधाओं को त्याग दिया और अपना जीवन परमेश्वर के कार्य के लिए समर्पित कर दिया?

प्रभु की पुकार अभी भी गूँज रही है, आप तक पहुँच रही है। क्या आप उठने और जहाँ भी वह आपको ले जाए, जागृति की मशाल ले जाने के लिए तैयार हैं?

सनसनीखेज खबर!

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम में सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!

तो, क्या आप सभी को हैरानगी पसंद है? तो, यह नया साल आप में से हर एक के लिए एक शानदार हैरानगी लेकर आया है! जानने के लिए उत्सुक हैं कि यह क्या है? सिर्फ बाइबल में ही नहीं, बल्कि इस युग में भी जिसमें हम रह रहे हैं, परमेश्वर मन को झकझोर देने वाले, अलौकिक आश्चर्यकर्म करते रहते हैं जो मानवीय समझ को चुनौती देते हैं। और हम "सनसनीखेज खबर" थीम के तहत इन आश्चर्यकर्मों का पता लगाने वाले हैं।

क्या आप रोमांचित हैं? इस महीने की अद्भुत कहानी में गोता लगाने के लिए तैयार हैं? चलिए शुरू करते हैं!

इज़राइल में नासरत से 7 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित 'काना' गाँव सुंदरता और आकर्षण के लिए प्रसिद्ध है। यह सुंदर गाँव लुभावने अंगूर के बागों से सुशोभित है जो जहाँ तक नज़र जाती है, वहाँ तक फैले हुए हैं। यहूदी परंपराओं के अनुसार, इस गाँव में विवाह का जश्न सात दिनों तक चलता है।

ऐसी ही एक विवाह में, यीशु के एक करीबी रिश्तेदार की विवाह हो रही थी। यह कार्यक्रम खुशी, संगीत और नृत्य से भरा हुआ था क्योंकि मिला और परिवार नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद देने के लिए एकत्र हुए थे। हालांकि, जीवित उत्सव के बीच, एक आपदा आ गई - मेहमानों को परोसी गई दाखरस खत्म होने लगी। यह मेजबानों के लिए एक बड़ी शर्मिंदगी की स्थिति बन गई और उत्सव पर ग्रहण लगने का खतरा था।

जब इस संकट को यीशु के ध्यान में लाया गया, तो उन्होंने सही समय का इंतजार किया। फिर, एक आश्चर्यजनक कार्य में जो प्रकृति से परे था, उन्होंने साधारण पानी को बेहतरीन गुणवत्ता वाली दाखरस में बदल दिया - जो उन्होंने पहले कभी नहीं चखी थी। यह एक असाधारण आश्चर्यकर्म था, जो उनकी परमेश्वरिय सामर्थ और अनुग्रह को प्रदर्शित करता था।



मित्रों, इस पर विचार करने के लिए एक पल लें! अंगूर का दाखरस बनाने में कम से कम 5 से 6 दिन लगते हैं। लेकिन यीशु ने एक पल में साधारण पानी को उच्च गुणवत्ता वाली दाखरस में बदल दिया, 'घटी' को 'बहुतायत' में और 'शर्मिंदगी' को 'आनंद' में बदल दिया।

यीशु के समय के ऐसे आश्चर्यकर्मों पर अचंभित होते हुए, मैंने हाल ही में कोयंबटूर से एक प्रेरणादायक कहानी सुनी जिसने मुझे गहराई से प्रभावित किया।

तमिलनाडु के कोयंबटूर जिले में, एक साधारण पृष्ठभूमि की युवती, जिसने मसीह को स्वीकार कर लिया था, अपनी माँ के साथ रहती थी। गंभीर कठिनाइयों के बावजूद, वह अपनी उच्च शिक्षा पूरी करने में सफल रही। जब उसकी विवाह का समय आया, तो उसे और उसकी माँ को एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा। उनके रिश्तेदार, जो प्रभु को नहीं जानते थे, ने उनका साथ देने से इनकार कर दिया। फिर भी, यह युवती और उसकी माँ यीशु से दृढ़ता से जुड़ी रहीं, और एक परमेश्वरिय जीवन साथी के लिए ईमानदारी से प्रार्थना करती रहीं।

नियत समय पर, परमेश्वर ने सही व्यक्ति को प्रकट किया, और विवाह की तारीख तय की गई। हालाँकि, उनके पास विवाह के खर्चों को पूरा करने के लिए पैसे नहीं थे। उनके रिश्तेदारों ने मदद करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई। फिर भी, उन्होंने हिम्मत नहीं हारा। अटूट विश्वास के साथ, उन्होंने अपनी सभी ज़रूरतों को एक कागज़ पर लिखा, उसे परमेश्वर के सामने रखा, और उस पर हाथ रख कर रोज़ प्रार्थना की। उन्होंने मदद के लिए किसी से संपर्क नहीं किया और न ही अपने संघर्षों को दूसरों के साथ साझा किया।

विवाह में सिर्फ़ एक हफ़ता बचा था, माँ बीमार पड़ गई। युवती बहुत परेशान थी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। लेकिन उन्होंने पूरे हृदय से यीशु पर भरोसा करते रहे। फिर, कुछ असाधारण हुआ। एक दिन, उसके प्रार्थना समूह के सहभागी उसके घर आए और एक विवाह का तोहफा लेकर आए। जब उसने उसे खोला, तो वह दंग रह गई— उसमें सोने के गहने थे। इतना ही नहीं, विवाह के खर्च के लिए ज़रूरी पैसे भी चमत्कारिक ढंग से मिल गए!

इससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक बात यह है कि उन्होंने एक भी पैसा उधार नहीं लिया और न ही किसी से मदद माँगी। परमेश्वर ने कुछ लोगों के दिलों को प्रेरित किया कि वे उनका साथ दें और उनकी हर ज़रूरत को पूरा करें। एक प्रेमी पिता की तरह, यीशु उसके साथ खड़ा रहा और सुनिश्चित किया कि उसका विवाह सुचारू रूप से आगे बढ़े। इस अविश्वसनीय आश्चर्यकर्म को देखकर, उनके अविश्वासी रिश्तेदार भी दंग रह गए। उन्होंने यीशु को सच्चा, जीवित परमेश्वर माना।

देखिए, मिलों, वही परमेश्वर जिसने काना में आश्चर्यकर्म किया था, आज भी ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर रहा है, जिससे साबित होता है कि वह जीवित और सक्रिय है। क्या आपको आज आश्चर्यकर्म की ज़रूरत है? निराश न हों। परमेश्वर आपके लिए भी आश्चर्यकर्म करेगा। ऐसा लग सकता है कि इसमें देरी हो रही है, लेकिन यदि हम विश्वास और प्रार्थना में लगे रहें, तो हम सही समय पर उसके आश्चर्यकर्मों को देखेंगे!

राष्ट्र के लिए प्रार्थना करें...

‘यीशु छुड़ाता है’

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)

World Revival Prayer Center, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Ranchi

World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Delhi

World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar, opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Mumbai (Malad)

World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Chandigarh

World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab - 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

*Come and
Pray*



प्रार्थना बिंदु

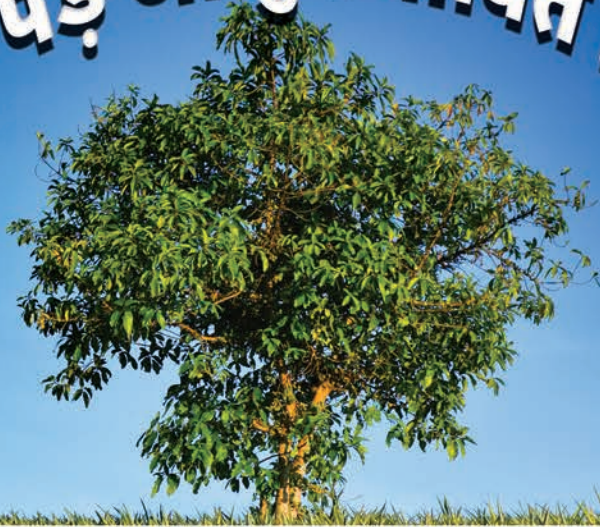
फ़रवरी 2025

1. गाजा युद्ध शुरू होने के बाद से अब तक लगभग 45,028 लोगों की जान जा चुकी है और 106,962 लोग घायल हुए हैं। हाल ही में हुए हमले में 24 घंटे के भीतर 52 लोगों की मौत हो गई। आइए हम इस स्थिति को बदलने और युद्ध को पूरी तरह से रोकने के लिए प्रार्थना करें।
2. आइए हम दोनों देशों के बीच युद्ध को रोकने और लोगों के बीच तनाव कम करने के लिए प्रार्थना करें।
3. आइए हम गाजा में अकाल समाप्त होने और बिना किसी बाधा के भोजन उपलब्ध कराने के लिए प्रार्थना करें।
4. आइए हम सरकार से बढ़ती खाद्य कीमतों के कारण संघर्ष कर रहे लोगों की देखभाल करने के लिए प्रार्थना करें।
5. आइए हम हवाई हमलों में मारे गए 79 लोगों के परिवारों के लिए सांत्वना और इन हवाई हमलों को रोकने के लिए प्रार्थना करें।
6. रिपोर्ट बताती है कि अब तक 44,000 से अधिक लोग मारे गए हैं। आइए हम इस युद्ध के समाप्त होने के लिए प्रार्थना करें।
7. आइए हम दोनों देशों के बीच चल रहे हमलों में फंसे निर्दोष लोगों की सुरक्षा और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रार्थना करें।
8. आइए हम अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद रोज़गार की प्रतीक्षा कर रहे युवाओं के लिए उपयुक्त नौकरी के अवसरों और आशीष के लिए प्रार्थना करें।
9. आइए हम युवाओं के लिए प्रार्थना करें कि वे एकजुट रहें और परमेश्वर के साथ जुड़े रहें, परमेश्वर के सेवक के रूप में आगे बढ़ें।
10. आइए हम प्रार्थना करें कि कोई भी पाप युवाओं को भ्रष्ट न करे और वे अपनी पवित्रता बनाए रखें।
11. आइए हम पाप और शाप में फंसे युवाओं के लिए प्रार्थना करें।
12. आइए हम प्रार्थना करें कि चर्च सच्चाई, प्रेम और परमेश्वर के लोगों के बीच एकता से भरे हों।
13. आइए हम परमेश्वर के सेवकों और लोगों का विरोध करने वाले दुश्मनों के सभी कार्यों के विनाश के लिए प्रार्थना करें।
14. आइए हम परमेश्वर के प्रत्येक सेवक और उसके लोगों के लिए प्रार्थना करें कि वे खुद को पवित्र करें और तैयारी के साथ परमेश्वर की आराधना करें, क्योंकि वह पवित्र है।

15. आइए हम परमेश्वर से प्रार्थना करें, जिसने अंतिम दिनों में सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा उंडेलने का वादा किया है, कि वह अपना अभिषेक बिना माप के उंडेल दे।
16. आइए हम प्रार्थना करें कि प्रभु उन सभी पर अपना अग्नि अभिषेक उंडेल दे जो ईमानदारी से खोज करते हैं और उन्हें उपहारों और फलों से भर दें, जिससे अंत के समय में कलीसियाओं में जागृति हो।
17. आइए हम भारत में फैल रही झूठी शिक्षाओं के उन्मूलन और लोगों में जागरूकता के लिए प्रार्थना करें।
18. हर साल, दुनिया भर में लगभग 800,000 लोग आत्महत्या करते हैं। आइए हम आत्महत्या के कारण हर 40 सेकंड में होने वाली मौतों को रोकने के लिए प्रार्थना करें।
19. आत्महत्या दुर्घटनाओं से ज़्यादा लोगों की जान लेती है। आइए हम आत्महत्या की भावना को बांधने के लिए प्रार्थना करें।
20. आइए हम पारिवारिक समस्याओं, प्रेम विफलताओं, तनाव और परीक्षा विफलताओं के कारण आत्महत्या को उकसाने वाली आत्माओं को बांधने के लिए प्रार्थना करें।
21. आइए हम आत्महत्या के विचार लाने वाले शैतान के कार्यों के विनाश के लिए प्रार्थना करें, और सभी को परमेश्वर के प्रेम को जानने के लिए प्रार्थना करें।
22. भारत में लगभग 3.5 मिलियन लोग कपड़ों की दुकानों में काम करते हैं, जिनमें से 80% 21-25 वर्ष की आयु की महिलाएँ हैं। आइए हम उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।
23. आइए हम सभी श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार के लिए प्रार्थना करें।
24. आइए हम सभी उद्योगों, बड़े कारखानों से लेकर छोटी दुकानों तक के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रार्थना करें।
25. आइए हम उन दुष्ट शलुओं के कार्यों और योजनाओं के विनाश के लिए प्रार्थना करें जो रक्तपात करना चाहते हैं और मानव जीवन को व्यर्थ में बर्बाद करना चाहते हैं।
26. आइए हम युद्धों, दुर्घटनाओं या प्राकृतिक आपदाओं के कारण पृथ्वी पर रक्तपात को रोकने के लिए लोगों को परमेश्वर के हाथों में सौंपने के लिए प्रार्थना करें।
27. आइए हम सार्वजनिक परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिए ज्ञान के लिए प्रार्थना करें और उनके मन में उनके पाठों की गहरी जड़ें हों।
28. आइए हम परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे परीक्षा के दिनों में छात्रों को किसी भी बीमारी से बचाएँ जो उन्हें प्रभावित कर सकती है।



अंजीर का पेड़ जो पुनर्जीवित किया गया



सभी प्रिय मित्रों को यीशु मसीह के नाम में अभिवादन ! बाइबल हमें अंजीर के पेड़ से एक गहरा सबक सीखने के लिए आमंत्रित करती है। पवित्रशास्त्र में अंजीर का पेड़ किसका प्रतीक है? यह दुनिया को क्या संदेश देता है? इस खंड में, हम इन सवालों पर स्पष्टता और अंतर्दृष्टि के साथ विचार करेंगे।

"अंजीर के पेड़ से सीखो। जब उसकी शाखा कोमल हो जाती है और उसमें पत्तियाँ निकलने लगती हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट है। इसी प्रकार जब तुम ये सब बातें देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन फाटक पर है" (मत्ती 24:32-33)। मित्रों, इस बाइबिल के दृष्टांत में अंजीर के पेड़ को अक्सर इज़राइल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व माना जाता है। जैसा कि भविष्यवक्ता यिर्मयाह लिखते हैं, "इस्त्राएल के परमेश्वर यहोवा, ने कहा, "यहूदा के लोग अपने देश से ले जाए गए। उनका शत्रु उन्हें बाबुल ले गया। वे लोग इन अच्छे अंजीरों की तरह होंगे। मैं उन लोगों पर दया करूँगा। मैं उनकी रक्षा करूँगा। मैं उन्हें यहूदा देश में वापस लाऊँगा।" (यिर्मयाह 24:5-6)। इस आयत के अनुसार, यदि अंजीर यहूदी लोगों का प्रतीक है, तो अंजीर का पेड़ इस्त्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। इस कल्पना के माध्यम से, बाइबल अपने चुने हुए लोगों के लिए पुनर्स्थापना, आशा और परमेश्वर की वफ़ादारी का एक कालातीत संदेश देती है। आइए हम इन सच्चाइयों पर विचार करें और जैसे-जैसे हम उनकी प्रकट होने वाली योजनाओं को पहचानते हैं, उनके करीब आते जाएँ।



परमेश्वर की योजना में इस्त्राएल (अंजीर का पेड़) का क्या महत्व है?

◀ पवित्र बाइबल जिसे हम अपने हाथों में पकड़ें हैं, वह इस्त्राएलियों को दी गई थी। इसे पहली बार मूसा के समय में दस आज्ञाओं और नियमों के रूप में दिया गया था, और ये आज हमारे पास मौजूद शास्त्रों की नींव बनीं।

◀ बाइबिल में इस्त्राएलियों का इतिहास है: उनका इतिहास, युद्ध, असफलताएँ, जीत और परमेश्वर द्वारा उन्हें जीने के लिए दिए गए दिव्य निर्देश। उल्लेखनीय रूप से, बाइबिल का 90% से अधिक हिस्सा इस्त्राएल और उसके लोगों के इर्द-गिर्द घूमता है। यह स्पष्ट रूप से इस्त्राएल के महत्व को रेखांकित करता है, जिसका प्रतीक अंजीर का पेड़ है।





◀ इसके अलावा, इस्राएल वह भूमि है जिसका वादा कुलपिताओं-अब्राहम, इसहाक और याकूब-और उनके वंशजों से किया गया था। यह केवल विरासत की भूमि नहीं है, बल्कि सृष्टि की शुरुआत से लेकर समय के अंत तक ईश्वर की शाश्वत योजना के प्रकट होने का एक केंद्रीय मंच है।

◀ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वह भूमि थी जहाँ प्रभु यीशु मसीह, दुनिया के उद्धारकर्ता, का जन्म हुआ, मानवता के पापों के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया, दफनाया गया और तीसरे दिन पुनर्जीवित किया गया। यह भी इस्राएल ही था जहाँ पित्तुकुस्त की शुरुआती बारिश के दौरान पवित्र आत्मा को उंडेला गया था, जिसने दुनिया भर में परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के प्रसार को प्रज्वलित किया।

यह समृद्ध विरासत और दिव्य उद्देश्य परमेश्वर की भव्य कथा में इस्राएल के अद्वितीय महत्व की पुष्टि करते हैं।

चुना हुआ और संजोया हुआ

“प्रभु ने याकूब को अपने लिए चुना है, इस्राएल को अपनी निज सम्पत्ति के रूप में”

(भजन 135:4)।

“तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है...” (यूहन्ना 15:16)।

इन आयतों के अनुसार, परमेश्वर ने स्वयं इस्राएल को अपने लोगों के रूप में चुना। इसलिए, इस्राएली वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने दैवीय रूप से चुना है।



जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है, “तो समझ लो कि जो विश्वास करते हैं वे अब्राहम की संतान हैं” (गलातियों 3:7)। प्रिय मित्रों, हम भी, जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, अब्राहम के आध्यात्मिक वंशज हैं। आप परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं। आप उनकी दृष्टि में अनमोल हैं। आप उनके हैं, उनकी अपनी विशेष सम्पत्ति हैं।

परमेश्वर की योजना में इस्राएल का एक अनूठा स्थान है

- ◀ इस्राएली परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं।
- ◀ इस्राएल प्रभु की भूमि है।
- ◀ इस्राएल प्रतिज्ञा की भूमि है।
- ◀ इस्राएल दूध और शहद से बहने वाली भूमि है।
- ◀ इस्राएल हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह की भूमि है।



इस्राएल को अक्सर "संसार की घड़ी" के रूप में संदर्भित किया जाता है। लेकिन यह राष्ट्र कैसे बना? इसका पतन कैसे हुआ? इसे कैसे बहाल किया गया? और आने वाले दिनों में इज़राइल का भविष्य क्या है?

हमारे साथ बने रहिए क्योंकि हम आने वाले दिनों में इन गहन सत्यों का अध्ययन करेंगे..!

मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ!



मसीह में अति प्रिय भाइयों और बहनों,
हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के अनमोल नाम में, आप सभी को अभिवादन! जैसे ही हम इस नए वर्ष में कदम रखते हैं, आइए हम राजाओं के राजा की आनंद से जय जयकार करें, जिन्होंने पिछले वर्ष के हर पल में हमें प्रेम से सुरक्षित रखा, हमें भोजन दिया, कपड़े पहनाए, भार उठाया, संभाला और बचाया, और हमें इस बिलकुल नए प्रकरण में लाया। इस साल, हम इस अनुभाग के माध्यम से एक आध्यात्मिक यात्रा शुरू करेंगे, प्रार्थना के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे, इसके गहन सत्वों पर ध्यान देंगे और अपने दैनिक जीवन में उनका अभ्यास करने का प्रयास करेंगे।

मध्यस्थता की प्रार्थना

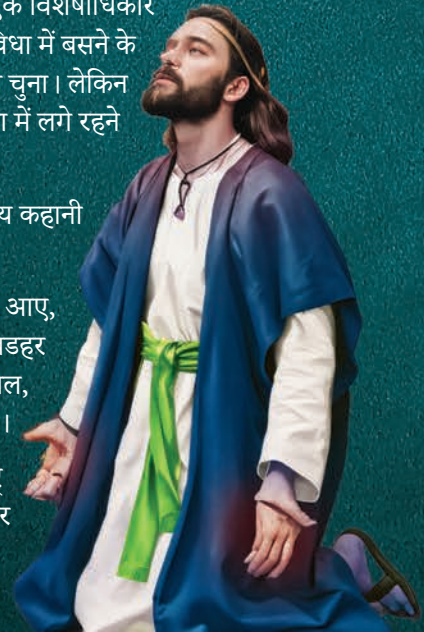
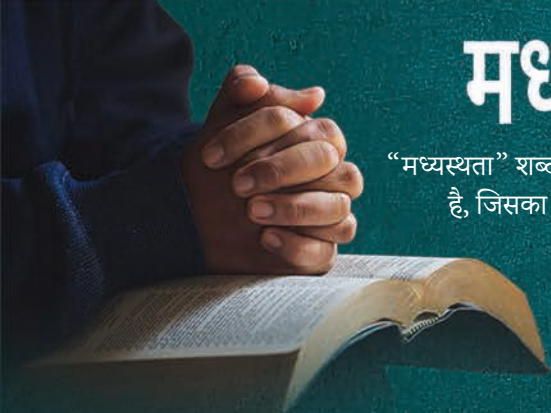
“मध्यस्थता” शब्द (नहेमायाह 1:4, 6) में दिखाई देता है। इब्रानी में, मध्यस्थता के लिए शब्द ‘पगा’ है, जिसका अर्थ है “किसी दूसरे की ओर से विनती करना।” इसका अर्थ है किसी और की ओर से किसी से ईमानदारी से अपील करना। नहेमायाह की पुस्तक एक सुंदर रचना है जिसमें 14 प्रार्थनाएँ शामिल हैं। नहेमायाह 1:4 में, हम उसकी हार्दिक प्रतिक्रिया देखते हैं: “ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कह कर प्रार्थना करता रहा।” नहेमायाह एक शाही अधिकारी था जो फारस के राजा

अर्तक्षत्र के लिए पिलानेहारा के रूप में सेवा कर रहा था - एक विशेषाधिकार प्राप्त पदवी जिसने उसे स्वयं राजा के करीब ला दिया। फिर भी, अपनी प्रतिष्ठित भूमिका की सुविधा में बसने के बजाय, उसने लगभग चार महीने तक विलाप, उपवास करना और उत्साहपूर्वक मध्यस्थता करना चुना। लेकिन क्यों? किस बात ने नहेमायाह को अपने शाही विशेषाधिकारों को त्यागने और इतनी गहन प्रार्थना में लगे रहने के लिए मजबूर किया? किस कारण से उसने इतनी ईमानदारी से मध्यस्थता की?

आइए हम मध्यस्थता प्रार्थना की सामर्थ्य और उद्देश्य को उजागर करने के लिए उसकी उल्लेखनीय कहानी में गहराई से देखें।

जब यहूदी निर्वासितों को बेबीलोन और फारस से रिहा किया गया और वे अपने देश यहूदा लौट आए, तो नहेमायाह ने अपने भाइयों से जाना कि उसके लोग गहरे संकट में थे। यरूशलेम की दीवारें खंडहर बन गयीं हैं, और उसके द्वार आग से जल गए थे। अपने लोगों और अपने राष्ट्र की दुर्दशा से बोझिल, नहेमायाह ने प्रार्थना में स्वर्ग के परमेश्वर की खोज की, पुनर्निर्माण और उद्धार के लिए विनती की।

एक शहर की दीवार केवल एक संरचना नहीं है; यह सुरक्षा और समर्थन का प्रतीक है। यह एक राष्ट्र को हमलावर दुश्मनों से बचाती है और इसके निवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। जब दीवार



को तोड़ दिया जाता है और इसके द्वार जला दिए जाते हैं, तो देश असुरक्षित और उजागर हो जाता है। ऐसी विकट स्थिति में, नहेमायाह ने खाई में खड़े हो अपने लोगों और उनकी भूमि को बचाने और पुनर्स्थापित करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। पवित्रशास्त्र का यह अंश हमें राष्ट्रीय संकट के समय में मध्यस्थता की सामर्थ सिखाता है।

इंग्लैंड के वेल्स में इवान जॉन रॉबर्ट्स नामक 15 वर्षीय युवक के हृदय में भी ऐसा ही बोझ था, उस समय जब पाप ने उसके राष्ट्र में गहरी जड़ें जमा ली थीं, शराब के दुरुपयोग का अभिशाप तेजी से फैल गया, वेश्यालय बढ़ गए, और लोग नशे और नैतिक भ्रष्टाचार में डूब गए। इवान के लिए, ऐसा लग रहा था मानो पवित्रता की दीवार टूट गई हो और पाप ने उद्धार के द्वार जला दिए हों।

दिन में कोयले की खदानों में काम करते हुए, इवान आधी रात को अपने घुटनों के बल गिर जाता और सुबह के शुरुआती घंटों तक परमेश्वर से पुकारता रहता- “हे प्रभु, मेरे राष्ट्र को बचाओ। मेरी भूमि को शुद्ध करो। मेरे लोगों को छुड़ाओ। मेरे देश में जागृति भेजो।” लगभग 11 वर्षों तक, यह युवक प्रार्थना में लगा रहा, रोता रहा और अपने राष्ट्र के पापों के लिए मध्यस्थता करता रहा। परमेश्वर ने उसकी पुकार सुनी और लोगों के बीच शक्तिशाली रूप से चलन किया, उन्हें उनके पापों का दोषी ठहराया। पश्चाताप की गहरी भावना ने कई लोगों को प्रभावित किया, जिससे वे आंसुओं में डूब गए, अपने गलत कामों को स्वीकार किया और परमेश्वर की ओर फिरे।

परिणाम आश्चर्यजनक थे: शराब की खपत कम हो गई, वेश्यालय और सार्वजनिक स्थान बंद हो गए, और थिएटर बंद हो गए। युवाओं ने अपनी शराब की बोतलें तोड़ दीं और अपने मनों को परमेश्वर की ओर फेर दिया। राष्ट्र ने एक गहरी परिवर्तन देखा, जो कि अपनी मातृभूमि के लिए बोझिल एक अकेले युवक की उत्कट प्रार्थनाओं से प्रेरित था।

प्रिय युवा योद्धाओं,

हम खुद को ऐसे महत्वपूर्ण समय में पाते हैं, जहाँ हमें भी अपने राष्ट्र और अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करनी चाहिए, जैसा कि

धर्मी नहेमायाह और पुनरुत्थान-वादी इवान रॉबर्ट्स ने किया था। हमारे विशाल भारत देश में, जिसकी जनसंख्या 144 करोड़ है, लगभग 42 करोड़ युवा हैं। किसी देश का भविष्य और प्रगति उसकी युवा पीढ़ी के हाथों में होती है। फिर भी, दुखद रूप से, वही युवा जो हमारे राष्ट्र के लिए सुरक्षा दीवार के रूप में खड़े होने के लिए हैं, विनाशकारी आदतों के गुलाम बन गए हैं।

युवा पीढ़ी पापपूर्ण आदतों के दलदल में डूब रही है - हानिकारक पदार्थों की लत, ऐसे जैसे कि चाय या कॉफी की चुस्की लेना, जेहरीले अवैध संबंधों में लिप्त होना, नशीले पदार्थों का लालसा, मोबाइल फोन का जुनून, पोशाक में अश्लीलता, भौतिकवाद

और नैतिक पतन। यह नैतिक पतन किसी लिंग भेद को नहीं जानता, जो युवा पुरुषों और महिलाओं दोनों को अपने रसातल में खींच रहा है। मामले को बदतर बनाने के लिए, जिन बुजुर्गों को युवाओं का मार्गदर्शन और प्रेरणा देनी चाहिए, वे अक्सर पतन की इस दौड़ में उनके साथ प्रतिस्पर्धा करते देखे जाते हैं।

बाइबल में सटीक रूप से कहा गया है, “जो व्यक्ति संयम नहीं रखता वह ऐसे घर के समान है जिसके दरवाजे और खिड़कियाँ टूटी हुई हैं।” (नीतिवचन 25:28)। युवा लोगों के लिए, जो परमेश्वरीय बुलाहट से बोझिल हैं, मध्यस्थ योद्धा के रूप में आगे आने का यह सही समय है नहेमायाह और इवान रॉबर्ट्स की तरह, खोए हुए और टूटे हुए लोगों के लिए खाई में खड़े हों।

युवा पीढ़ी, जागो!

एक नहेमायाह ने प्रार्थना की, और दीवारें फिर से बनाई गईं। एक इवान रॉबर्ट्स ने मध्यस्थता की, और एक राष्ट्र पवित्र हो गया। प्रिय भाई, प्रिय बहन, क्या आप आज एक नहेमायाह के रूप में, एक इवान रॉबर्ट्स के रूप में, हमारे राष्ट्र के लिए मध्यस्थता करने के लिए उठेंगे? क्या आप ऐसे समय के लिए खुद को परमेश्वर के उद्देश्य का एक पात बनने के लिए समर्पित करेंगे?

अभी बुलाहट है। चुनाव आपका है। क्या आप जवाब देंगे?



मसीह के सुदृढ़ शिष्य

“मसीह के सुदृढ़ शिष्य” विषय के अंतर्गत, आइए हम कुछ उल्लेखनीय व्यक्तियों के जीवन पर विचार करें। सबसे पहले हम, स्तिफनुस के प्रेरणापूर्ण जीवन पर मनन करेंगे। भोजन वितरण सेवकाई में एक विनम्र भूमिका सौंपे जाने के बावजूद, स्तिफनुस ने इसे बड़े विनम्रता के साथ स्वीकार किया और इसे ईमानदारी से पूरा किया (प्रेरितों 6:3, 5)। परमेश्वर के अनुग्रह और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरे हुए, उन्होंने लोगों के बीच बड़े-बड़े चमत्कार और चिह्न दिखाए (प्रेरितों 6:8)। स्तिफनुस एक ऐसा व्यक्ति था जो पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित था, और पूरी तरह से उसके उद्देश्य के प्रति समर्पित जीवन जी रहा था।



स्टीफन

जब स्तिफनुस विश्वासयोग्यता से अपनी सेवकाई कर रहा था, तो उसके खिलाफ विरोध उत्पन्न हो गया। मसीह की उसकी साहसिक घोषणा से क्रोधित होकर, कुछ लोग उससे बहस करने लगे। फिर भी, स्तिफनुस, उनकी शत्रुता से विचलित हुए बिना, उन्हें शांति और सम्मानपूर्वक संबोधित करते हुए कहा, “हे भाइयों और पितरों, मेरी बात सुनो!” (प्रेरितों 7:2)। अपने जीवन के लिए डरे बिना, उसने अडिग विश्वास के साथ पवित्र-शास्त्र की सच्चाइयों की घोषणा की। इससे उसके विरोधी क्रोधित हो गए और उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। उल्लेखनीय रूप से, अपने अंतिम क्षणों में भी, स्तिफनुस ने अपने निर्दयी हमलावरों को माफ कर दिया और, यीशु की तरह, पुकारा, “हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।” इस प्रार्थना के साथ, उसने अपनी आत्मा को समर्पित कर दिया (प्रेरितों के काम 7:60)।

स्तिफनुस एक ऐसा शिष्य था जो अपनी आखिरी सांस तक मसीह के लिए दृढ़ रहा। उसकी शहादत ने शाऊल के परिवर्तन की नींव रखी, जो बाद में प्रेरित पौलुस बन गया। यह जानते हुए, आइए हम स्तिफनुस की तरह सुदृढ़ शिष्यों के रूप में जीने के लिए खुद को समर्पित करें। चाहे हमें मिलों या परिवार से अस्वीकृति का सामना करना पड़े या सांसारिक लाभों से वंचित रहना पड़े, हमें कभी भी यीशु मसीह के प्रति अपने विश्वास से इनकार नहीं करना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों। आइए हम मसीह के लिए दृढ़ रहने का संकल्प लें, अंत तक अडिग!



समाचार

देशभर में चेक बाउंस के लंबित मामले 43 लाख तक पहुंचे



केंद्र सरकार ने खुलासा किया है कि पूरे भारत में, विभिन्न अदालतों में 43 लाख चेक बाउंस के मामले लंबित हैं। पिछले साल 18 दिसंबर तक, राजस्थान 640,000 मामलों के साथ सबसे आगे है, उसके बाद महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल का स्थान है।

देश भर में अदालती लंबित मामलों में ट्रैफ़िक चालान और चेक बाउंस के मामले महत्वपूर्ण योगदानकर्ता हैं। हालाँकि ट्रैफ़िक चालान अब वर्चुअल कोर्ट के माध्यम से निपटाए जा रहे हैं, लेकिन चेक बाउंस के मामलों में अभी भी उनकी आपराधिक प्रकृति और सबूत संबंधी ज़रूरतों के कारण नियमित न्यायिक सुनवाई की आवश्यकता होती है।

अपर्याप्त केस नियंत्रण, बार-बार निलंबन और निर्धारित समय-सीमा की अनुपस्थिति इन मामलों को हल करने में देरी का कारण बनती है। अतिरिक्त चुनौतियों में अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, पर्याप्त न्यायालय कर्मियों की कमी और संबंधित तथ्यों की जटिल प्रकृति शामिल है, जो न्यायपालिका पर और बोझ डालती है।

- हिंदू तमिल थिसाई, 29 दिसंबर

भारतीय अर्थव्यवस्था 2025 में सुधरने के लिए तैयार: RBI गवर्नर



भारतीय रिजर्व बैंक के नवनियुक्त गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कल वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट जारी करने के दौरान अपने संबोधन में 2025 के लिए आशावाद व्यक्त किया। उन्होंने उद्योगपतियों के बीच बढ़ते कारोबारी आत्मविश्वास और देश भर में बढ़ती खपत प्रवृत्तियों का हवाला दिया।

वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण 2024-25 वित्तीय वर्ष की पहली छमाही के दौरान आर्थिक विकास में मंदी आई, लेकिन हम दूसरी छमाही में मजबूत सुधार की उम्मीद करते हैं। चालू वित्त वर्ष के लिए देश की जीडीपी वृद्धि 6.6% रहने का अनुमान है। RBI की रिपोर्ट में गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों में उल्लेखनीय गिरावट पर भी प्रकाश डाला गया है, जो पिछले 12 वर्षों में रिकॉर्ड निचले स्तर 2.6% पर आ गई है।

- दिनाकरन, 31 दिसंबर



हेलो प्रिय मित्रों! मैं इस वर्ष एक बढ़िया लेख के ज़रिए आपसे जुड़कर रोमांचित हूँ। शीर्षक को देखकर, आप सोच रहे होंगे, “यह सब क्या है?” आज की दुनिया में, सब कुछ ट्रेन्ड (प्रचलन) के इर्द-गिर्द घूमता है। लेकिन मसीही नवयुवकों के रूप में, हमें इस संसार के तौर-तरीकों के अनुरूप नहीं होना है या इसके मानकों के अनुसार नहीं जीना है, वरन हमें अलग रहने के लिए बुलाया गया है। परमेश्वर चाहता है कि हम अलग तरह से जिएँ। जैसा कि पवित्रशास्त्र आज्ञा देता है, “अन्य-जातियों का मार्ग मत सीखो” (यिर्मयाह 10:2)।

1 तीमुथियुस 4:12 में युवा तीमुथियुस को दी गई अपनी सलाह में पौलुस ने इस निर्देश को जोर देकर कहा:

“कोई तुम्हारी जवानी को तुच्छ न समझे, परन्तु वचन, चालचलन, प्रेम, आत्मा, विश्वास, पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बनो।”

इस आयत से प्रेरणा लेते हुए, हम आने वाले महीनों में इन छह पहलुओं—वचन, चालचलन, प्रेम, आत्मा, विश्वास और पवित्रता—पर खोज करेंगे। मसीह के अनुयायी होने के नाते, हमें इन क्षेत्रों में आदर्श बनने के लिए कहा जाता है ताकि दूसरे हमारे जीवन से प्रेरित हो सकें, न कि हमारे कारण ठोकर खाएँ। इस महीने, आइए यह समझना शुरू करें कि हम अपने शब्दों में कैसे अनुकरणीय हो सकते हैं।

शब्दों में सामर्थ है

अक्सर कहा जाता है कि शब्दों में असीमित सामर्थ होती है। प्रभु की इच्छा है कि हम जो भी शब्द बोलें वह “अच्छा, शिक्षाप्रद और आध्यात्मिक विकास के लिए लाभदायक” हो।

हालाँकि, हम कभी-कभी लापरवाही से बोलते हैं, बिना रुके कि हमारे शब्द सही हैं या गलत, उपयोगी हैं या हानिकारक, शुद्ध हैं या अशुद्ध। क्योंकि हमारे आस-पास के लोग लापरवाही से बोलते हैं, हम भी जाल में फँस जाते हैं, यह सोचकर कि “यह ट्रेन्ड (चलन) है,” और बिना सोचे-समझे इसमें शामिल हो जाते हैं।

आज की दुनिया पर नज़र डालें—अभद्र भाषा (गाली-गलोच) का इस्तेमाल करना एक सार्वजनिक ट्रेन्ड (चलन) बन गया है। कई युवा इसे आत्मविश्वास का प्रतीक मानते हैं। कुछ साल पहले, निजी तौर पर भी अश्लील शब्द बोलना शर्मनाक माना जाता था। लेकिन

अब, लोग सार्वजनिक रूप से ऐसे शब्दों का खुलकर इस्तेमाल करते हैं, इसे सामान्य और चलन मानकर टाल देते हैं। प्रिय जवान भाइयों और बहनों, संसार इसे एक ट्रेन्ड (चलन) के रूप में देख सकता है, लेकिन हमारे लिए, जो एक पवित्र परमेश्वर की आराधना करते हैं (1 पतरस 2:21), यह कोई ट्रेन्ड (चलन) नहीं है। ऐसा व्यवहार हमारे प्रभु के हृदय को दुखी करता है। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से निर्देश देती है: “कोई गंदी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर जो आवश्यक निर्माण के लिए अच्छी हो, ताकि सुनने वालों पर अनुग्रह हो” (इफिसियों 4:29)।

शब्द मसीह का प्रतिबिम्ब हैं

प्रिय नवयुवकों, याद रखें कि हमारे द्वारा बोले गए हर लापरवाह शब्द का न्याय के दिन हिसाब लिया जाएगा (मत्ती 12:36)। यीशु मसीह के अनुयायी होने के नाते, जो पवित्रता में राजसी हैं, हमें अपने शब्दों के माध्यम से उनकी महिमा करने के लिए बुलाया गया है, न कि उनके नाम को बदनाम करने के लिए।

इसलिए, हमें अपने बोली के प्रति सचेत रहना चाहिए, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे शब्द परमेश्वर को महिमा दें और दूसरों के लिए एक उदाहरण के रूप में काम करें। हमारे शब्द मसीह की सुंदरता को दर्शाएँ, दूसरों को उनसे दूर करने के बजाय उनकी ओर ले जाएँ। इस महीने, आइए हम अपने शब्दों को सोच-समझकर बोलने का प्रयास करें और अपने आस-पास के लोगों के लिए एक परमेश्वरीय उदाहरण स्थापित करें।

